श्री सिद्धचक्र की स्तुति

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो, दिन आठ,
ठाठ से प्राणी, फल पायो मैना रानी।। टेक ।।

मैना सुन्दरी इक नारी थी, कोढ़ी पति लख दुखियारी थी,
नहीं पड़े चैन दिन रैन, व्यथित अकुलानी।। फल पायो....

जो पति का कष्ट मिटाऊँगी, तो उभय लोक सुख पाऊँगी,
नहीं अजा गलस्तनवत् , निष्फल जिन्दगानी।। फल पायो....

एक दिवस गई जिन मन्दिर में, दर्शन कर अति हर्षी उर में,
फिर लखे साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी।। फल पायो....

बैठी कर मुनिको नमस्कार, निज निन्दा करती बार बार,
भर अश्रु नयन कहिं मुनि सो, दुखद कहानी।। फल पायो....

बोले मुनि, पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो,
नहिं रहे कुष्ठ की तन में, नाम निशानी।। फल पायो....

सुन साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होय झूठ मुनि के बैना,
करके श्रद्धा श्री सिद्ध चक्र की ठानी।। फल पायो....

जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया हैं,
सबके तन छिड़का यंत्र न्हवन का पानी।। फल पायो....

गंधोदक छिड़कत सात दिन में, नहीं रहा कुष्ठ किंचित तन में,
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी।। फल पायो....

भव योग-भोग योगीश भये, श्री पाल कर्म हनि मोक्ष गये,
दूजे भव मैना पावे शिव रजधानी।। फल पायो....

जो पाठ करेमन वच तन से, वे छूट जाय भव बन्धन से,
मानव मत करो विकल्प कहे जिनवाणी।। फल पायो....